# गपशप

## 'युवराज' का मुंबई दौरा

'युवराज' ने मुंबई जाकर धमाल मचा दिया। शिवसेना ने काला झंडा दिखाने को कहा था, पर दिखा नहीं पाई। कोई एक शिवसैनिक काला झंडा लिए भीड़ में दिखाई पड़ा। 'युवराज' ने लोकल ट्रेन में सफ़र कर सुरक्षाकर्मियों के लिए समस्या पैदा कर दी। वैसे, लगता है कि कुछ बीहड़ किस्म के सुरक्षाकर्मी सादी पोशाक में भीड़ का हिस्सा बने उनके आगे-पीछे रहते हैं। 'युवराज' ने सिर्फ़ लोकल में सफ़र ही नहीं किया, बल्कि टिकट भी स्वयं लाइन में लगकर काउंटर से खरीदा। नकदी नहीं थी, इसलिए एटीएम से पैसे निकाले। यानी पूरे 'आमजन' बन गए। अब भला 'युवराज' के लिए यह अच्छा लगता है? जो पूरे देश का राज संभालने के लिए तैयार हो रहा है या तैयार किया जा रहा है, उसका ऐसा व्यवहार शोभनीय है? हर्गिज नहीं। युवराज के मुंबई में घूमने के लिए गाड़ियों का काफ़िला था। वैसे ट्रेन से यात्रा करने का 'दिखावा' करना था तो टिकट के लिए किसी को भेज सकते थे। चंद सैकेंड में टिकट हाज़िर हो जाता। नगदी नहीं थी तो नहीं थी। उन्हें नकदी की जरूरत भी क्या थी! और थी भी तो एक इशारे पर नोटों की बरसात हो सकती थी। पर युवराज ने मुंबई में जो कुछ किया, वह एक 'राजपुत्र' को शोभा नहीं देता। पर 'युवराज' के जो सलाहकार हैं, उन्हें वे कहीं भी जाएं, नौटंकी करने की सलाह देते हैं। इसी सलाह के अनुसार 'युवराज' कभी गरीबों की झोंपड़ी में रात बिताते हैं तो कभी राह चलते किसी ढ़ाबे में खाना खाते हैं। वैसे ही सलाहकार-मंडली के अनुसार उन्होंने मुंबई में भी वाहवाही लूटी और कहते हैं कि इसकी एक झलक पाने के लिए मुंबई में सुंदरियों की भीड़ उमड़ पड़ी जिनकी नज़र इनके चेहरे से हटती नहीं थी-'तेरे चेहरे से हटती नहीं नज़र, नज़ारे हम क्या देखें।'

## चीनी कम

शरद पवार का आसन डोल रहा है। कहते हैं, आलाकमान इनसे नाराज़ है। इन पर आरोप है कि ये महंगाई से लोग़ों को डरा रहे हैं। वैसे भी सोनिया से उनके रिश्ते कभी अच्छे नहीं रहे। सोनिया इस बात को भूली नहीं हैं कि उन्हें विदेशी मूल का बताकर प्रधानमंत्री पद संभालने योग्य नहीं कहा था और पार्टी छोड़कर अलग पार्टी का गठन किया था। पर जब इनकी पार्टी का कोई विशेष रुतबा नहीं बन पाया तो इन्होंने कांग्रेस से हाथ मिलाया और संप्रग में आकर मंत्री बन गए। कांग्रेस को भी समर्थन की जरूरत थी। पर पहली बार कृषिमंत्री रहने के दौरान ये भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के अध्यक्ष चुन लिए गए और अपना पूरा कार्यकाल 'क्रिकेट की राजनीति' में ही लगाया। दूसरी बार संप्रग फ़िर सत्ता में आयी तो इन्हें दोबारा कृषि एवं खाद्य मंत्री बनाया गया। इस बार इनके पास कृषि और खाद्य मामलों पर ध्यान देने की पूरी 'फुर्सत' है, लेकिन ये महंगाई बढ़ाने के अभियान में लगे हुए हैं। उनकी पार्टी के मुखपत्र का यह भी कहना है कि चीनी कम खाओ और बेहतर तो यही होगा कि मत खाओ। चीनी नहीं खाने से कोई मरता नहीं। देखते नहीं, जिन्हें मधुमेह की बीमारी है, वे चीनी नहीं खाते, पर चीनी नहीं खाने से वे क्या मर जाते हैं? बहुत अच्छी सलाह दी है राकांपा के मुखपत्र ने। हो सकता है अनाज़ की बढ़ती कीमतों पर वे कहें कि चार रोटियां खाने की जगह सिर्फ़ दो रोटी खाओ और पानी खूब पी लो ताकि भूख का अहसास कुछ समय के लिए न हो। औरतों को वे स्लिम और ज़ीरो साइज फ़ीगर बनाने के लिए 'कम से कम' खाने की सलाह दे सकते हैं। पर पानी की बढ़ती कीमतों के बारे में वे क्या कहेंगे? पानी पीना कम कर दो।

## अमर सिंह की पार्टी

'वेश्यारूपी' राजनीति और फ़िल्मी दुनिया के अभिनेताओं-अभिनेत्रियों के प्रमुख दलाल अमर सिंह को मुलायम ने पार्टी से ही बाहर निकाल दिया तो उनके होश उड़ गए। आखिर 'किडनी की कीमत' पर उन्होंने मुलायम का साथ दिया था और यह सोच रखा था कि मुलायम उन्हें मना ही लेंगे, उनके लिए अपने भाइयों और बेटे को फटकारेंगे और फ़िर वे डिज़ायनर कपड़े पहने मुलायम के साथ चलेंगे।

वैसे, मुलायम ने उन्हें मनाने की कम कोशिशें नहीं कीं। पर जब अमरसिंह बार-बार कहने पर नहीं माने तो मुलायम ने पहलवानी दाव लगा कर उन्हें चित्त कर दिया। क्या अमर सिंह को यह मालूम नहीं था कि एक ऐसा भी दौर था जब मुलायम पहलवानी के क्षेत्र में अच्छी-खासी हैसियत रखते थे। बहरहाल, पार्टी से निकाले जाने के बाद यह कयास लगाए जाने लगे कि अमर सिंह अब किस पार्टी की पूंछ पकड़ते हैं। शुरू में यह अंदाजा लगाया गया कि वे कांग्रेस अथवा बहुजन समाज पार्टी में जा सकते हैं। पर इन पार्टियों में उन्हें कोई विशिष्ट पद दिया जाए, इसकी संभावना नहीं के बराबर थी। अब अमर सिंह क्या करें? बॉलीवुड में अपने दोस्तों के साथ गम ग़लत करने चले गए। फिर उन्होंने यह घोषणा कर दी कि वे अपनी अलग पार्टी बनाएंगे। कौन-सी पार्टी? कैसी पार्टी? समझा गया कि अमर सिंह के चरित्र को देखते हुए पार्टी दलाल भूमिका निभाएगी और चुनावों के दौरान 'इस' या 'उस' गठबंधन में शामिल हो जाएगी। इस सवाल पर अमर सिंह अपने फ़िल्मी और गैरफ़िल्मी दोस्तों के साथ गहन चिंतन-मनन कर रहे हैं।

## पलटे मोदी

गुजरात के मुख्यमंत्री अब भाजपा की केंद्र सरकार विरोधी नीति से पलटते नज़र आ रहे हैं। पहले तो मुलायम सिंह के अत्यंत करीबी माने जाने वाले अमिताभ बच्चन के साथ बैठकर फ़िल्म 'पा' देखी और अमिताभ के आग्रह पर फ़िल्म को टैक्स फ्री कर दिया। फिर आंतरिक सुरक्षा सहित अन्य मसलों पर बुलाए गए मुख्यमंत्रियों के सम्मेलन में मनमोहन सिंह की जमकर तारीफ़ की। सम्मेलन में गृहमंत्री पी.चिदंबरम ने मोदी की तारीफ़ करते हुए कहा कि गुजरात सभी मसलों में ठीक चल रहा है। वहां विधि-व्यवस्था पूरी तरह से चाक-चौबंद है।

कट्टर हिंदुवादी कहे जाने वाले मोदी इस तरह उदार हो सकते हैं और केन्द्र सरकार की तारीफ़ कर सकते हैं, ऐसा किसी ने नहीं सोचा होगा। मोदी की इस अदा से भाजपा तो भाजपा, संघ का नेतृत्व भी अचरज में है।

## 'चाक-चौबंद' जेबकतरे

सेक्टर-3, बल्लभगढ़ में गुरु रविदास जयंती पर मुख्यमंत्री हुड्डा अपने तमाम लाव-लश्कर के साथ पहुंचे थे। उनके साथ साए की तरह ज़िला कांग्रेस अध्यक्ष भी चल रहे थे। मुख्यमंत्री हुड्डा जब कहीं पहुंचते हैं और वह भी किसी कार्यक्रम में तो वहां उनके चमचे, चमचों के भी चमचे और चूजे चमचे मंच के पास ऐसी भीड़ लगा देते हैं कि स्थिति भगदड़ वाली हो जाती है और मुख्यमंत्री का सुरक्षा घेरा तार-तार हो जाता है और तार-तार ऐसा भी कि जेबकतरे सेंधमारी कर देते हैं। मंच पर हुड्डा के साथ अपने आपको 'प्रदर्शित' करने वालों में होड़-सी मच जाती है। स्थानीय प्रशासन व्यवस्था को पूरी तरह चाक-चौबंद बताता है, पर हुड्डा के आगे-पीछे चलने वाले लोकल नेताओं को कैसे नाराज़ करें। हुड्डा तो आए और चले जाएंगे, पर उनका काम और लोकल नेताओं का काम एक-दूसरे के बिना तो नहीं चल सकता। यह तो पहले से तय होता है कि मुख्यमंत्री के साथ मंच पर कौन-कौन बैठेगा, पर मंचस्थ होने के लिए एन वक्त पर होड़ शुरू हो जाती है। खैर, कांग्रेस ज़िलाध्यक्ष महोदय को तो मंच पर बैठना ही था। वे मुख्यमंत्री के साथ बैठे भी। बैठने के बाद उन्हें अपनी जेब कुछ हल्की महसूस हुई। उन्होंने जेब में हाथ डाला तो उनका मोबाइल गायब था। आखिर, जेबकतरे पुलिस और सुरक्षाकर्मियों से ज़्यादा चाक-चौबंद निकले।

## नंगे हुए बाल ठाकरे

शिवसेना प्रमुख का कुर्ता बाल ठाकरे के भतीजे राज ठाकरे ने उतार लिया और पायजामा उतार लिया आरएसएस ने। रह गई चड्डी सो युवराज राहुल उतार कर ले गए। यह देख ठाकरे के चरण छूने वाले शरद पवार दिल्ली से उड़कर मुंबई पहुंचे और मातोश्री जाकर सिर से पांव तक नंगे ठाकरे को एक रूमाल थमा दिया और कहा कि हो सके तो इसी से अपनी इज्ज़त ढांके, उनके पास धोती-गमछा तो है नहीं, बस यही रूमाल है। कहने को तो पवार आस्ट्रेलियाई टीम की वकालत करने गए थे जिसकी कोई आवश्यकता रह नहीं गई थी। वे ज़माने लद गए जब ठाकरे के इशारे पर क्रिकेट पिच खुद जाया करती थी, पर अब जानकारों के मुताबिक इस मुलाकात का असल मकसद कांग्रेस को यह जताना है कि पवार मराठी मानुष भी हैं। यदि कांग्रेस ने उनकी राजनीतिक दुकानदारी पर कोई लगाम लगाने का प्रयास किया तो वह मराठी 'सम्मान' का मुद्दा बन सकता है। पवार के इसी रूमाल की महिमा है जो शाहरुख की फ़िल्म का विरोध न करने की घोषणा कर चुके ठाकरे ने फिर से विरोध का झंडा उठाकर सड़कों पर गुंडागर्दी शुरू कर दी।

## चिर कुंआरे और कुंआरियां

राजनीति की दुनिया में कुंआरों की संख्या बढ़ती जा रही है। अब जबकि हमारे महान् 'युवराज' ही अभी तक कुंआरे बैठे हैं तो स्वाभाविक है कि उनके समर्थकों भी कुछ ऐसा ही करना पड़े। यह तो अच्छा किया सोनिया ने जो समय रहते एक एय्याश बढेरा के गले अपनी पुत्री प्रियंका को बांध दिया, नहीं तो सचमुच राजनीति में आकर वे चिरकुंआरी रहने का व्रत ठान लतीं तो क्या होता? बस एक मामला बबुआ जी का है, पर बबुआ जी हैं कि मानते नहीं। इंटरनेट सर्फिंग, किटी पार्टीज, लांग ड्राइव और कुत्ता-सवारी के इतने खेल खेल जनतंत्र के मसीआहों ने निकाले हैं कि उनके बारे में ज़्यादा जानकारी भी नहीं मिल पाती। वैसे, अब झुग्गी-झोंपड़ियों के बीच घूमने ओर किसी गांव में रात भर रहने वाले शिगूफ़ों में वक्त बरबाद न कर दिल्ली विश्वविद्यालय, जेएनयू आदि के कैंपसों में जाना शुरू कर दिया है। वहां के छात्र बड़े चालू हैं। ऐसे-ऐसे सवाल पूछते हैं कि राहुल रुआंसे तक हो जाते हैं। एक बार उनका निजी सचिव सुरक्षा प्रहरियों को चकमा देकर तलघर में बने ऑडिटोरियम मे ले गया। इतने-इतने तरह सक प्रेमालाप किये जाने का वर्णन वहां किया गया था और रेखा चित्रों के माध्यम से उन्हें समझाया गया था कि समझ में नहीं आता कि कोई प्रोग्राम वहां किस तरह चलाया जाता होगा? संभवत: रंगाई-पुतवाईकरवा दी जाती हो। पर युवराज ने इसमें कोई रूचि नहीं दिखाई। मामूली मुस्कान के साथ वे चलते बने। दोनों यूनिवर्सिटियों में रेस्पांस अच्छा रहा। समर्थकों ने फूल मालायें पहनाईं तो विरोधियों ने इनके विरोध काफ़ी नाचा-कूदा और उछला। नार्थ कैंपस के एक फेमश कॉलेज में तो हद ही हो गई, युवराज के मंच पर भाषण देने के दौरान ही एक अत्याधुनिका छात्रा अपनी सीट से उठ कर तेज़ी से मंच की तरफ़ बढ़ी और सुरक्षा के काबू में आते-आते वह युवराज से लिपट ही गई। युवराज हक्के-बक्के। सुरक्षा कर्मियों ने उसे जबरन वहां से भगाया, पर वह ज़ोर-ज़ोर से अपने प्यार का इजहार करती रही। निकट से देखने वालों का कहना है कि उसने युवराज की पप्पी तक ले ली। जो भी हो, लोगों ने मज़ा खूब लिया।

## शहर में दौर जारी है शुभकामनाओं का

शहर में शुभकामनायें देने का सिलसिला जोरों पर जारी है। आप चाहे जहां भी जाएं, आपको नववर्ष और होली की शुभकामनाओं के स्क्रीन बोर्ड नज़र आ जाएंगे। कहीं छोटे तो कहीं बड़े बोर्ड लगे हैं तो कहीं पोस्टर ही चिपका दिए।

इसके पहले सिलसिला चला था लोहिड़ी और मकर संक्रांति पर शुभकामनाओं का। अब जो यह सिलसिला शुरू हुआ है वह लगता है, नगर निगम के चुनावों तक चलेगा।

एक छुट्टभैया नेता स्क्रीन बोर्ड पर अपने बड़े नेताओं की छोटी और अपनी बड़ी तस्वीर छपवा कर आम जनता को शुभकामनाएं देता है, पर इन शुभकामनाओं का स्पष्ट संदेश है - अरे मैं पार्षद पद के लिए उम्मीदवार बनने जा रहा हूं, सो वोट मुझे ही देना। एक आत्मविश्वास से पूर्ण ऐसी नेत्री और अभिनेत्री हैं जो एक ज़माने में फरीदाबाद सुंदरी भी रह चुकी हैं, सिर्फ़ अपना स्क्रीन बोर्ड लगवाया है इस नारे के साथ - 'काम किया है, काम करेंगे। इस बार वोट दें' यानी यह खुल कर सामने आ गई हैं। भाजपा से विधायक पद की उम्मीदवारी के लिए पूरा ज़ोर लगाया था, पर उम्मीदवारी मिली नहीं। अब तो खैर, पार्षद का पद तो हाथ में रहे।

पूरे शहर में इन बोर्डों पर न जाने कितने लाख खर्च हुए होंगे। रोज ही नए-नए बोर्ड सामने आ जाते हैं और नेताओं का विज्ञापन करते हैं। एक कांग्रेसी नेता के पुत्र जिस वार्ड से पार्षद थे, वह महिलाओं के लिए आरक्षित हो गया। अब कांग्रेसी नेता ने दसियों जगह अपनी तस्वीर और अपनी बहू की तस्वीर स्क्रीन बोर्ड पर लिखवा रखी है। यानी पुत्र नहीं तो पुत्रवधु ही चुनाव लड़े। बस पार्षद का पद अपने घर से बाहर न जाए।

इन बोर्डों को देखने से लगता है कि इस शहर में नेताओं और उनके चूजों की भरमार है। कई बार चूजे अपने खर्चे पर नेताओं का स्क्रीन बोर्ड बनवा कर लगवा देते हैं और फ़िर नेताजी की चरण वंदना करने चल पड़ते हैं। नेताजी पार्षद बनेंगे तो कुछ न कुछ 'प्रसाद' उन्हें भी अवश्य मिलेगा। कम से कम नगर निगम में दलाली करने का ही मौका मिल जाए। नेताजी प्रसन्न हो गए तो पार्टी में भी कोई अच्छा-सा पद दे सकते हैं।

जहां तक शुभकामनाओं का सवाल है, बढ़ती महंगाई के इस दौर में सिर्फ़ शुभकामनाओं से लोगों का पेट नहीं भर सकता। उन्हें चाहिए कि कम से कम भगवती जागरण और साथ में लंगर का कार्यक्रम भी चलाते रहें। पर यह तब ठीक होगा जब चुनावों के लिए हरी झंडी दिखा दी जाए। फ़िलहाल शुभकामनाओं के माध्यम से प्रचार कार्यक्रम चल रहा है, वह ठीक है। नेता जब जनता को शुभकामनाएं देते हैं तो उससे लोगों का हौंसला बढ़ता है। वैसे वोट देना एक 'पवित्र कार्य' है, नेतागण बार-बार इसे बताते हैं और अभी असली प्रचार कार्य तो बाकी है। - **गरीबदास**

## भूल सुधार

**गतांक में 'ईएसआई अस्पतालों पर केन्द्र ने राज्यों को फटकारा, ठीक से काम करो या काम छोड़ो' के शीर्षक से ख़बर का शेष पृष्ठ 2 पर ले जाते समय एक पूरा पैराग्राफ तकनीकी खामी की वजह से छूट गया जो इस प्रकार है :**

**बिहार व मेघालय की सरकारों ने तो बिल्कुल हाथ खड़े करते हुये इस सेवा से पीछे हटने का फ़ैसला सुना भी दिया है।** अब देखना है कि हरियाणा तथा बाकी राज्य इस पर क्या निर्णय लेते हैं। राज्य सरकारों का इस योजना से पीछे हटने का एकमात्र कारण उनकी प्रशासनिक मशीनरी का कुंद होना है। यह दर्शाता है कि राज्य सरकारों की प्रशासनिक मशीनरी इतनी नाकारा हो चुकी है वह किसी (ईएसआईसी) द्वारा 87.5 प्रतिशत खर्चा करने के बावजूद अपने राज्य के निवासियों को स्वास्थ्य सेवायें उपलब्ध कराने में सक्षम नहीं है।

हरियाणा में ईएसआई की स्वास्थ्य सेवाओं को चलाने के लिये चंडीगढ़ में 92 लोगों का स्टाफ़ बैठा रखा है जिसके मुखिया को डायरेक्टर ईएसआई कहा जाता है। इस पद पर राज्य के किसी वरिष्ठ डॉक्टर को ही बैठाया जाता है, परंतु अब तक इस पद पर छांट-छांट कर नालायक, निकम्मे व भ्रष्टतम लोगों को ही बिठाने की प्रथा थी। इसका बेहतरीन उदाहरण तीन माह पूर्व सेवानिवृत डॉक्टर सहारण हैं।

इस डाइरेक्टर एवं स्टाफ़ के ऊपर दो आईएएस अफ़सर (श्रम आयुक्त तथा श्रम सचिव) सीधे तौर पर तैनात होते हैं। लेकिन इन अफ़सरों ने कभी ईएसआई की ओर ध्यान देने की जरूरत नहीं समझी। इसे हमेशा एक फ़ालतू तथा बेकार का काम समझकर ईएसआई के डायरेक्टर पर छोड़े रखा। वह जो चाहता, जैसे चाहता, वैसे ही ये ऊपर के आईएएस करते चले जाते थे जिसके बदले सारण उनकी थोड़ी-बहुत सेवा-पानी व चापलूसी कर देता था। इसी के चलते जानकार बताते हैं कि एकबार तो सारण ने महिलाओं की सुविधा के नाम पर दस करोड़ के सेनेटरी पैड तक खरीदने की स्वीकृति नरेश गुलाटी आईएएस से प्राप्त कर ली, वह तो किस्मत माड़ी थी सहारण की जो गुलाटी का श्रम विभाग से तबादला हो गया, नहीं तो राज्य भर में ईएसआई के अस्पतालों व डिस्पेंसरियों में सेनेटरी पैड ही भरे होते।

नालयक एवं भ्रष्ट अफ़सरशाही के चलते, ईएसआई को लेकर हरियाणा सरकार की समस्या यह बनी हुई है कि दवाइयों के खाते में राज्य सरकार वर्ष 2009-10 में कारपोरेशन से जहां 33.4 करोड़ रुपये प्राप्त करके अपनी जनता को अधिक व बेहतर दवायें उपलब्ध करा सकती थीं वहां सरकार ने निगम से मांगे ही केवल 18.8 करोड़ रुपये।

**इससे राज्य सरकार ने अपने हिस्से का योगदान दो करोड़ तो बचा लिया परंतु राज्य की जनता को तो 16 करोड़ का नुक्सान हो गया।**